Dr. Raj Gopal
Department of Philosophy
V.S.J. College Rajnagar

Constituents of Inference (Lecture-2)

विपक्ष :- पक्ष का दूसरा समानान्तर पद विपक्ष या असपक्ष है। वह स्थान जहाँ साध्य का अभाव सर्वदा निश्चित हो विपक्ष कहलाता है। जैसे, ऊपर के उदाहरण में नदी, समुन्द्र आदि असपक्ष या विपक्ष कहलाता है क्योंकि नदी समुन्द्र आदि में अग्नि साध्य का सर्वथा और निश्चित अभाव होता है।

(2.) साध्य ⇒ साध्य अनुमान का दूसरा आवश्यक पद है। इसका अन्य नाम लिङ्गी, व्यापक, गम्य आदि है। साधन द्वारा जिस वस्तु की सिद्धि होती है उसे साध्य कहते हैं। जिस वस्तु का ज्ञान लिङ्ग द्वारा होता है उसे लिङ्गी कहते हैं। उपरोक्त उदाहरण में धुआँ हेतु है अग्नि साध्य है। वाचस्पति के अनुसार साध्य 'धर्मविशिष्ट धर्मी' या 'धर्म से युक्त धर्मी' है, अतः उपर्युक्त अनुमान में अग्नि से युक्त पर्वत साध्य है। बौद्ध आचार्य दिङ्नाग ने भी साध्य को 'धर्मविशिष्ट धर्मी' के रूप में स्वीकार किया है।

(3.) हेतु (लिङ्ग) ⇒ अनुमान का तीसरा घटक हेतु है। इसे लिङ्ग, गमक, अपदेश आदि नामों से सूचित किया जाता है। साधारण बोलचाल की भाषा में हेतु को 'कारण' कहा जाता है। कारण का अर्थ है वह कारण जो विषय की उपस्थिति में सर्वाधिक प्रभावशाली रूप से उपस्थित हो। उपरोक्त उदाहरण में पर्वत पर धुआँ वर्तमान हेतु अथवा लिङ्ग कहा जाता है। इसी के द्वारा पर्वत पर अग्नि की उपस्थिति का अनुमान किया

जाता है। अनुमान में हेतु का विशिष्ट महत्त्व है इसकी यथार्थता अथवा अयथार्थता पर ही अनुमान की वैधता अवैधता निर्धारित है। व्याप्ति के कारण किसी स्थान विशेष में साध्य की सत्ता प्रमाणित करने वाला साधन हेतु है। यथा पर्वत पर धुआँ को देखकर पर्वत पर अग्नि का अनुमान किया जाता है। पर्वत पर धुआँ का दर्शन ही अनुमान का हेतु है।

कुमारिल भट्ट के अनुसार जिसमें साध्य की व्याप्ति रहती है उसे हेतु कहते हैं। सांख्य दर्शन में हेतु को व्याप्य कहा जाता है उपरोक्त उदाहरण में धूम व्याप्य है अग्नि व्यापक है। धर्मकीर्ति के अनुसार जो पक्ष का धर्म हो और उसके एकदेश में व्याप्त रहे उसे 'हेतु' कहते हैं। मनोरथनन्दी ने हेतु के दो लक्षण बतलाये हैं। (i) हेतु पक्ष का धर्म है। (ii) हेतु पक्ष के अन्य अंश साध्य के साथ व्याप्त रहता है।

(i) हेतु पक्ष का धर्म है - मनोरथनन्दी के अनुसार पक्ष के दो अंश होते हैं, धर्म और धर्मी। जिस गुण या लक्षण को प्रदर्शित करने पर साध्य (अनुमेय) की सिद्धि होती है उसे धर्म कहते हैं; तथा जो साध्य (अनुमेय) वस्तु इस धर्म को धारण करता है उसे धर्मी कहते हैं। पक्ष धर्म और धर्मी दोनों को धारण करता है। पर्वत धुआँ और अग्नि दोनों को धारण करता है। यहाँ धुआँ धर्म है। यह पक्ष के एकदेश में व्याप्त है। अतः धूम ही धर्मी के धर्म होने के नाते हेतु है।